श्री साईबाबा

श्री साईबाबा ग्रत कथा

श्री साईनाथ सिद्ध बीसा चंद्र

श्री साईनाथ सिद्ध बीसा चंद्र

श्री साईनाथ सिद्ध बीसा चंद्र
बाबा जम से हिंदू थे या मुसलमान। वे शिखर में नीम-गुड़ के तले सोलह वर्ष की हानिकारक में स्थायी भाव के कवर्तारियों पक्के हुए थे। उस समय वे पूर्ण जनयानी प्रतीत होते थे। यद्यपि वे देखने में तराश प्रतीत होते थे, पुष्प उनका आचरण मलातियों के सदृश था। वे तपाई और वैराप की साधारण प्रतीति थे। बाबा का बयारा एक दूरी-दूरी मिसाल थी, जिसे वे द्वारा तारा करते थे।

उनका समय के लिए उपदेश था—"राम (जो हिंदुओं के भगवान हैं) और रहम (जो मुसलमानों के खुदा हैं) एक ही हो और उनमें विश्वास भी पैदा नहीं है, फिर तुम उनके अनुयायी को पूर्ण-पूर्ण रहकर परस्पर झगड़ते हो? अजानी भक्ताओं! एकता साभ और एक साथ मिल जाओ।"

साइबाबा में अपने भक्तों के समन्व में प्रकट होने की शक्ति व अन्य शुद्धियाँ शिखर थीं। बाबा के जीवनाला में उनके उद्देश्य चरकारों के अनेक कदम पर चल रहे थे। केवल उनके भक्तों के समन्वय में प्रकट होने की शक्ति व अन्य शुद्धियाँ शिखर थीं। उनमें प्रत्रोड़ता को मत नहीं रखते थे।

शिखर के बारे में भक्तों को शिखर में प्रकट होने के लिए उपदेश था—"शिखर के लिए अपने संस्कार को छोड़ दें। शिखर के दर्जन में उनका अधिकार रहता है। शिखर के बारे में भक्तों को शिखर में प्रकट होने के लिए उपदेश था—"शिखर के लिए अपने संस्कार को छोड़ दें। शिखर के दर्जन में उनका अधिकार रहता है।"
फलावधेश

श्री साईबाबा का गुरुदास ग्रत रखने से निन फल अन्वेष होते हैं—
1. पुत्र आत्म, 2. कार्य सिद्धि, 3. का आत्म, 4. वेद आत्म, 5. खोया धन मिले, 6. समीक्षा-आज्ञावादी मिले, 7. धन मिले, 8. साईबाबा सर्वनाश, 9. शांति, 10. सांप शांत हो, 11. धार्मिक में चुंबक, 12. परिवार में सफलता, 13. पति का छोटा प्रेम मिले, 14. बाह्य की भी आलाद हो, 15. इतना वस्त्र की आदत, 16. खाना योग मिले, 17. खोया रिहायश मिले, 18. रोग निकालि, 19. कार्य सिद्धि, 20. मनोक्षेत्र में चुंबक इत्यादि।

ग्रत की सही विखि

श्री साईबाबा का यह बुद्धि ही विश्वविद्यालय ग्रत है। इस ग्रत की आचरण करने के पूर्व होने के आकार का एक नया समेत कपड़ा लेकर उसे गोली हल्दी में दुःशाना सुखा ली। गुच्छा का आत्म: अत्यंत सर्वोत्तम स्थान करके स्वच्छ बचत धारण करने तत्परता पुर्वविद्या की ओर स्वच्छ कपड़ा वितरण कर एक आचरण रहे उठे इस पर साईबाबा की मूढ़ अवश्य दिखाई और स्थापना बनाने।

अब साईबाबा को चंदन/कुमजुला का लिखा लगाए, तात्पर्य हूँसी की माला चढ़ाई दी प्रेम एवं अनुभव-पुरुषी भी लगाए।

इस तैयारियों के पशुपति बाबा के सामने वैदिक पहले से तैयार हल्दी वाले सुखे पीत कपड़े में एक छिड़का रखकर जिस कार्य सिद्धि के लिए प्रत रख रखे हैं, उसका निर्विवाद पूरा करने के लिए साईबाबा से सच्चे
1. साई भक्ति की प्रमुखता तथा श्रद्धा से साई बाबा का ब्रत रखना चाहिए। स्मरण रखने कि मन में बैर रखना कभी भी साई के पास से प्राप्त होने हो सकती।
2. यह सरल ब्रत सभी साई-पुजारी यहाँ तक कि बच्चे भी रख सकते हैं।
3. ब्रत को शुरू करने समय ५, ७, ९, ११ अप्रैल २१ गुरुवार की वेलक रखनी चाहिए।
4. स्मरण रखने कि ब्रत के दौरान मूर्ख ना रहें। फलताह करने यह ब्रत किया जा सकता है। भोजन मीठा, नमकीन कैसा भी हो सकता है। प्याज पीने के लिए रोक नहीं है।
5. यह ब्रत सरल होने के साथ ही बहुत चमकदार है। मानने गए प्राचीन गुरुवार का विविधपूर्वक ब्रत रखने से इच्छित फल की प्राप्ति होती है।
6. यह ब्रत किसी भी गुरुवार को बाबा की प्रतिमा या चित्र के समस्त 'पूर्व-अग्नित' कर शुक्ल किया जा सकता है। जिस कार्य-सिध्द के लिए ब्रत कर रहे हो, उसके लिए बाबा से मन हो मन पवित्र हृदय से प्राप्त करें।
7. साईबाबा का यह ब्रत कभी भी सुंदर, पाकर, श्रद्धा इत्यादि भी रखना जा सकता है।
8. यदि ब्रत के दौरान किसी गुरुवार को आप यात्रा पर या यात्रा (निवास या गाव के) हो तो उस गुरुवार को छोड़कर उसके बाद के गुरुवार को ब्रत करें।
9. यदि किसी कारण ने किसी गुरुवार ब्रत ना कर पाए तो उस गुरुवार को निमंत्रण में न लेने एवं मन में किसी आशा की रोक ना रखने हेतु अपने गुरुवार से ब्रत जारी रखें एवं मन हेतु गुरुवार पूरा कर तत्काल उद्धार करें।
10. वह ब्रत अनुसार तत्काल पूरा करने के प्रयासों पर मन कर सकते हैं और फिर ब्रत कर सकते हैं।
श्री साई बाबा की कृपा

एक समय के बाद है। श्रीमती लीलादेवी और उनके पति श्रीधर अहमदाबाद में प्रेमपूर्वक रहते थे। अचानक समय बदला और श्रीधर को युद्धस्थल में बहुत घटा हुआ। उसकी अच्छी-हतीरी चलसी दुख्यान पर ताली हड़त गए, जिसकी वजह से वह पर बैठ गया। खाली बैठ-बैठ उसका व्यवहार चिंतिस्वता हो गया। वह अक्सर लीलादेवी की हड़ताल करता।

ज्यादा भी उसके स्वभाव में आए परिवर्तन से खिंच रहे रहते। लीलादेवी की बहुत धार्मिक प्रतिकृति की महत्ता थी। वह जानती थी कि ईश्वर इस दुःख की कोई राह जरूर नथी देगा।

एक दिन लीलादेवी के द्वार एक अद्भुत तेजस्वी चेहरे वाले बुद्ध समुद्र आए और उसे उनके मिठास में दाल-चावल मिला। लीलादेवी ने उसका दान और दान का नमस्कार किया। लीलादेवी ने खुद ही लीलादेवी को दाल-चावल दिए और उनके नमस्कार किया। श्रीधर ने खुशा होकर उसे अविश्वासी दिया और लीलादेवी के दूर चलकर हड़ताल कर उसे श्री साई बाबा के गुरुकार वाले ब्रज को करने की विधि सादाली।

उनके बताते कि सामान्य अनुमान मानक १, २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, ९, १० अचानक २१ गुरुकार तक श्री साई बाबा का ब्रज करने, विधि से उधार निकलने, गोबर को भोजन करने से उसकी मनोगती पूर्ण होगी। इस सहा को ब्रज करने समय में, छोटा दिन दिन आदि का ब्रज करना ज़रूर रहता। इस सहा के ब्रज करने पर यथार्थ कि १, २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, ९, १० दुःख के ज्ञात स्वयं दायर करते हैं। श्री साई के ब्रज करने पर वह दुःख के समय रूप की हो जाते। इतने समय बाद को जहाँ लीलादेवी अच्छी फैसला हो गई और अपने सुखद से ही उसने श्री साई बाबा का पत्र किया और देखते ही देखते उसके पत्र के स्वभाव में आर्यत्व जनक परिवर्तन आ गया और उसने फिर से व्यापार चालू किया जो बहुत सफल हुआ। इस पर श्री साई बाबा की कृपा से शुभ-शान्ति हो गई।

एक दिन लीलादेवी की बहन और उसके पति उसमें मिलने आए। श्रीधर ने लीलादेवी की खुशी देख के भी बहुत प्रसन्न हुए। लीलादेवी की बहन ने उससे पुछा कि यह चमत्कार कैसे हुआ? तब चौथे विस्मृति पहाड़ी नहीं करते और किसी भी कहना नहीं मानते, बहुत उटट होते जा रहे हैं, जिसकी वजह से सब-कुछ होते हुए भी में सुखू नहीं है।

लीलादेवी ने उस श्री साई बाबा के गुरुकार ब्रज की महिमा बताई। इस प्रति दिन लीलादेवी की बहन बहुत प्रसन्न हुई और उसने पूर्ण मनोरंजन से आन्दोलन विधिवत से। इस प्रति दिन लीलादेवी की निरन्तर प्रसन्नता हुई किंतु इसका परिणाम यह हुआ कि उसके बच्चे मन लगाकर पढ़ते एवं हमेशा का अवतार आते और साथ ही साथ पर के छोटे-बेटे काम में भी उसका हार्दिक बनता। वह श्री बाबा के ब्रज का प्रभाव बताने लगी और समय भी इस प्रति का प्रभाव करती रही। श्री साई बाबा ने जैसी कृपा उन पर की, वैसी समय पर करें। जो पड़ सके और उसने उस पर कहा भी सभी मनोरंजन शिऱ्ड हो जाए।

तो भी श्री साई बाबा की महिमा। बोलोः

"अन्तिम कॉट प्रदान नाथक राजस्थानियों में योगीभी प्रभाव
श्री सचिवदान्द सदन श्रीसाई बाबा महाराज की जय।"

व्यवहार में सफलता

गुरुवार शहर में एक दलपुर व्यापारी लालराम जी रहते थे। शहर में उनकी बारे में चर्चा हो जाती, सभी प्रकार की सुध-सुमद्द थी। अचानक एक-एक कर सभी मित्रों में मजबूतों ने हड़ताल कर दी। सेठजी का मन बहुत दिखाया हुआ। मामला अलग था और नतीजों के दबाव की वजह से वह शुरू होने के आसार नहीं लग रहे थे।

इस समय में सेठजी के एक दुर्दान्त के रेलवे का उसके मिलने आया।
सुनीता ने किताब हाथ में ली और कुछ पूरा पढ़े तो साइबरवाला की कृपा से उसके मन में वह ब्रांट करने की चिंता जाग उठी, जहां पुराना तुलसी बी लेकर आई। सुनीता की धारा 21 गुस्कर तक ब्रांट करने के भारत मानने। सुनीता ने 'साइबरवाला ब्रांट' करने का संकल्प लिया। विषयपूर्ण ब्रांट शुरू किया और आपात्वर्ष! उसी रात उनके मामाजी एक अच्छे घर के पढ़े-लिखे सुसंस्करण बनाने के लिए इंजीनियर लड़के का दिशा लेकर आए। सुनीता की मामी और लड़के की मो बचपन की बंधनी भी। सुनीता की मामी ने लड़के से सीधे बात कर दी थी। सुनीता के बारे में सुनकर बालक बहुत उस्मानित था। उसे सुनीता 'जैसे ही पत्नी की तलाश थी, जो पत्नी-लिखी बदौलत हो और उसके साथ कदम से कदम मिलाकर बल सके। सुनीता यह सब जानकर बहुत खुश हुई। एक ही माह में सातवी उम्रों में सुनीता का विवाह सम्पन्न हो गया। ऐसी है 'श्री साइबरवाला ब्रांट', उसकी महिमा!}

!! अन्त: कॉर्ट प्रह्याश! नायक राजसाहिब योगीराज पूर्वी श्री सचिनदानंद सदरुप साइबरवाला महाराज की जय।!!

उदाहरण 1

कथा का लिखावें सम्पन्न हुआ

कुमुद बहन को बेटी सुनीता वेसी तो बहुत गुस्कर थी, परन्तु दयालु थी। ओर से कुमुद बहन के पति की आर्थिक स्थिति भी सामान्य थी। बड़ी बच्चे के सबर की उसकी हेसबत नहीं थी। सुनीता का उस बिहार योगी हो गई थी, पर उसकी शादी हो नहीं पड़ी थी। धरी-धरी उसकी आयु के साथ माता-पिता की दिनता भी बढ़ती लगी। सुनीता खाना फक्के, रिसाइंट-काटे और सभी कामों में बहुत कुशल थीं, प्रेमजात भी थीं। स्वभाव के भीतर वह समझदार और हंसमुख थीं, पर फिर भी उसे योग बनाना नहीं मिल पर रहा था। एक वित सुनीता अपने पड़ोस में सहेजाँ तुलसी के बाहर उड़ी तो देखी तुलसी के पुस्तक पत्ते पड़े। सुनीता ने पूछा 'तुलसी, क्या पत्ता रहा है? ' तब हुसली ने कहा 'वह श्री साइबरवाला ब्रांट' की किताब है। हमारी कुमुद के यहां आया इस ब्रांट का उदाहरण था, जहां सब को एक-एक किताब बाढ़ी गई। ' जब
श्री जैन जी का जीवन

अव्याख्यात 5

अलौकिक का सुक्त

श्री जैन जीं और अलौकिक के विवाह की 18 साल हो गए थे, परन्तु उनके सन्तान का सुख प्राप्त नहीं हुआ था। जिसकी जगह से पर में साक्षर होने पर भी वहाँ संसार-सामूहिक रहता था। वृद्ध लोग संसार से में नहीं एलिजा तथा बच्चों को तस्वीर भए थे। कई दिनों, जीवन से जुड़े मामलों को दिखाने के बाद भी वह आलोक का मूल देखने को तस्वीर भए थे।

वर्तमान दिन अलौकिक के आसपास में अमृत की महा-पुष्प से उबालकर होकर आए वे ने सच्चाई के लिए नहीं बीते। अलौकिक के पूर्वोत्तर पर उन्होंने तस्वीर का पत्र लिखकर उसने अन्य लोगों को दिखाया है, इसे बुद्धि-बुद्धि आत्म सेवा करने और चमकाया देते।' ऐसा कहकर अलौकिक ने उन्हें 'श्री जैन जी का जीवन' के पुस्तक के दौरान निर्देशित समझाई।

अलौकिक जी के सपनों पर नज़र रखते हुए विवाह के साथ बप का आर्य्म किया। बप आर्य्म करने के बाद है वह ज्यादा उनकी नज़रों पर आया और कहने लगा कि उनका माल अब उसे बहुत लाभ हुआ है। उन्हें अपना माल जो वह अपने युवा पुत्र श्री जैन जी के लिए दिखाया है, अपने माल के भी सारे अभिमान दे गया और स्वयं कुरुक्षेत्र में हुई देख हुई उनके रूप में मानी गई।

अलौकिक जी के तो सागर बाराबंकी के लिए पुष्कर मुनाफ़ होगा। जो रकम बहुत बड़ी मान रहे थे, वह तो बाप आई है, बापमाता में भी बुद्धि हो गई। इस अनुभव जी के लोगों को अभिलाषित से अभी लाभ होगा, इसलिए उन्होंने इस बप की दो सी एक प्रतिभाओं अपने समर्थकों में वितरित की।

ऐसा है 'श्री जैन जी का जीवन' की माफिक।

।। अनंत कीड़ा ब्राह्मण नायक राजेश्वर पवनपाठ श्री सचिवदास सदासुंद साहित्य महाराज की जय।

अव्याख्यात 6

अलग-अलग में सफलता

दू. गौतम माहेश्वर शहर का एक प्रवर्तित डॉक्टर था। उनके पति का कम आयु में ही स्वागत हो गया था। उनका एक पुत्र था। उनका सपना था कि उनका बेटा भी बड़ा होकर अच्छा डॉक्टर बने और वह भी बहुत सीस्कन बुद्धि का, 10वीं कक्षा तक वह अपने भूमिका में प्रवर्तित.
आरती साईबाबा का व्रत का यह आरती साईबाबा 'सीख दत्तार जीवा देवा रज राधा'।। दो दरार को सहारा दिया नन्द को सहारा।। आरती साईबाबा...

अस्तित्व को मन से स्नेह दिया जीवा देवा रज राधा।। देवा रज राधा।। आरती साईबाबा।।

फ्रेम वर्गीकरण के अनुसार यह आरती साईबाबा सीख दत्तार जीवा देवा रज राधा को सहारा।।

इन स्तोत्रों को आपके स्वयं के लिए पहले से ही पढ़ने के लिए यह आरती साईबाबा सीख दत्तार जीवा देवा रज राधा को सहारा।।
श्री साई बाबाके मंदिरचा वृत्त

श्री साई बाबा की कथा

(चाल: अराती, श्री रामणजी की)

अराती श्री साई-गुरुका की। प्रसन्नन, सदा सुरक्षा की।

जाकी कृपा विपुलसुखकारी। दूःख, शोक, संकट, प्रभावित।

शरदी में अवतार रचिता। ब्रजकार से तब दिखाया।

कितने पक्ष चरण पर आये। वे सुख, गिरी विरंतन पाये।

भव धरी जो मन में जाना पावत अनुष्ठ वो ही कैसा।

गुल की उदी लगवे ततको। समाधान लाभ उस मनको।

साई नाम सा जो गावे। सो फल जाने शकावत पावे।

गुलाब से ठीक पुष्प-सेवा। उस पर कृपा करत गुजरेकि।

राम, कुमार, हनुमान रूप में। ते दर्शन, जानत जो मन में।

दिविष धर्म के सेवक आले। दर्शन इंकित फल पाये।

जे बोले अवसरमुक की। १०।।

‘साईदास’ आरती की गायी। यह में बिस गुंज, संगीत पावे।

पद

साई तप प्रस्ताव करना, बच्चों का पालन करना।

जाना तुम्हें जगत्सरसा, सब ही छूट जगाना।

में अंगा हूं बंदा आकाश, गुलाम का चित्त दिखलाना।

dात गरुण की अब तढ़े बोल, बच नहीं मेरे रसात।

रह नहीं रहने अब रहे साई।

dमें अंगा हूं बंदा दुहाना। मैं ना जानूं, अलवालाय जल।

खाली जनना मैं निकला। सरी आखरी किया न कोई।

अपने मस्तिका झुगुं गरुण है।

मातक हमारे, तुम बाबा साई।

श्री साई बाबा की कथा

(चाल: अराती, श्री रामणजी की)

जो शामिल में जाए। आपद दूर भगाईए।

चढ़े समाधि की सोडी पर। पैर तले दुःख की पीठ पर।

त्याग शैर चला जाईए। भक्त हेतु दृढ़ आज्ञाए।

मन में रक्षा दूर विषयास। की समाधि पूरी आई।

मुझे सदा जीवित ही जानो। अनुभव करो सत्य पहचानो।

मेरी शरण आ खाली जाय। हो तो कोई मुझे बताये।

जैसा भव रहा जिस जन का। वैसा रूप हुआ मेरे मन का।

भार तुम्हारा पुक्क पर होगा। वचन न में भूल न होगा।

आ सहायता लो भरपूर। जो मौंग वह नहीं है दू।

मुझे मीन वचन मन काय। उसका श्रण न कभी चुकाया।

चन्द्र-गम्भीर व पक्ष अनन्य।

श्री साई बाबाके मंदिरचा वृत्त

(चाल: अराती, श्री रामणजी की)

जय ईश्वर जय साई दयालु! ती जगत का पालनकर।

dतर दिनागाम प्रसू अवतार। ते सब में सब संसार।

रहस्य-संग्रह अवतार।

दर्शन में दो मुनि मेरे निम्न चीरस फेरे। कपनों के पी इस साथ।

होली की की गीता।

नीम तले तुम प्रकट हुए। फलकी बन के तुम आये।

कलमुख में अवतार किया। प्रसाद पत्र तुम्हें दिया।

शिक्षा गान में वास किया। जीवन का मन भुगा लिया।

विन धेरो साहब मेरा। बसी जैसी मोहन की।

द्वारा का ती आखरी में। अनुभवादं बालों में।

भय दहका वो माह। समा गये जहाँ साई।

जन्म जाता है पाप वहाँ। बाबा की है घूटी जहां।

18
दिए हैं तुमने ग्यारह वर्ष भर प्रति भक्ति के लिए लिए आनंद।
कल-करण में तुमने हैं भक्ति। तुमने लीला शिख भक्ति महान।
क्या कहने के लिए गुणगाना? बुद्धिमान मैं हूँ नादान।
दूसरी ठाकर हो दासा। हम सबके तुम हो जाता।
प्रकृति को अब तुम हो। चरण में ले ले अब तुम हो।
सुभो श्राबंध साई का आचार। साई लीला के गुणगाना।
इस भक्ति से जो गायेगा। भक्ति का यह पायेगा।
हर दिन सुभो श्राबंध का। गाये साई वाकनी का।
साई देखे उसका साथ। लेकर भाव में हाय।
अनुभव तुसर के यह बोल। शब्द बड़े हैं यह अनमोल।
भक्ति जिसका मान लिया। जीवन उसका सफल किया।
साई शक्ति विपण स्वरूप। मनोहर साई का रूप।
गीत से देखे हुम साई। बोलो जय सुभो साई।

नाम स्वरूप
जय अंद, जय अंद, जय जय अंद, अंद अंद अंद अंद, जय जय अंद।
जय साई, जय साई, जय साई अंद अंद साई, अंद साई, अंद साई।

साई बाबा का भोग
भोग लगाओं साई बाबा रे मेरा प्रेम भरा वाला प्रिति के पकवान बनाए और भाव भरे भोजन मैं अपने हाथ से कहकर तो मंगाई ताजा में तैयार। आधी पकवान रे मेरा प्रेम। भाल गंगा जमुना के नीर लाज्ज़ प्रेम से पान कराई।
भोग लगाओ साई बाबा रे मेरा प्रेम भरा थाल
शबरी सुदामा और विदुर की भक्ति
ऐसी तृप्ति कर लेना मेरे साई बाबा भोग लगाओ
साई बाबा मेरा प्रेम भरा थाल।

साई कुपा से प्रत कथा लिखवाईं, भक्तों के हाथों में पहुंची।
साई सुनन बोल कर जोईं, उसका कल्याण तो हस्तम होई।

प्रार्थना

यह सीप दिया साए जीवन, साई नाम तुम्हारे चरणों में।
अब जीत तुम्हारे चरणों में, अब हार तुम्हारे चरणों में।
मै जग में यहू तो ऐसे रहूं, जो जाल में कपड़ा का फूल रहे।
मेरे अवगुना दोष सम्पन्न हो, है नब तुम्हारे चरणों में।
अब सीप दिया...मेरा निर्धार है बस एक यही, एक बार तुम्हें मे पा जाई।
अर्पित कर दू दुनिया भर का सब रीत तुम्हारे चरणों में।
अब सीप दिया...जब-जब मानन का जन्म मिले, तब-तब चरणों का पुनर्जीवन हुई।
इस सेवक को एक-एक रा का हो तार तुम्हारे हाथों में।
अब सीप दिया...

बाबा की प्रार्थना करिए, साई मेरे दु:ख को हरिए।
शिरही में बाबा की पूर्ति है श्रद्धा, भक्ति को लगे है न्याय।
मेरे साई मेरा बाबा, मेरा मंदिर मेरा काब।

भगवान तुम ही हो साई, तुम्हें ही भक्ति करता हू।
कालिगुप्त का तुम आप थे साई, भक्तों के कल्याण को जाई।
भक्ति भाव से पड़े कथा जो, उसकी इच्छा पूरी हो जाई।
बाबा मेरे आओ साई हमको दर्शन दिखाओ।

तुम बिन दिल नहीं है लगाता, आूँ ब्रज दरिश्य निम्नलिखित।
जब-जब देखें तेजी मुरू, तब-तब भीथ जाए मेरी सुरू।
अंधा को अिर्दर है दे देते, दु:ख भक्तों के खुद है सहाय।
ब्रजन को पुण्य है देते, दीन दु:खी के दु:ख हर लेते।
तुम-सा नहीं है कोई सहाई, जापन रहें हम साई-साई।

नाम तुम्हारा मंगल करा, भक्तिवाद से भक्तों को तारा।
बाबा मेरे अवगुण माफ कर देना, भक्ति मेरी की हो लेना।
तुम्ही ही मेरे बाबा साई, सोच-शोच हम दया हरि।
बाबा दया हम पर करना, अपने चरणों में ही रखना।
चरण में तुम्हारे सीतल छाया, बचे रहेंगे नहीं पड़ेगी मंद छाया।
हमरी शुद्धि निर्मल करना, जग की भलाई हमसे करना।
हमको साधन बना लो पुरा, दुष्य कुपा श्रमा दो बाबा।
अजानी हम बालक मनुष्य, तेरी देश से हो मन की शुद्धि।
पाप ना कोई हमसे होने पाए, दुख कोई जीव हमसे ना पाए।
हर पल मला हम करते जाएं, गुणगान हर पल तेरे गाएं।

दोहा
1. साई हम पर कृपा करो, बालक है अनजान।
2. मंदुबुद्धि हम जीव है, हमको लो आन संभाल।

प्रसाद-याचना
अन्त में हम सर्वशक्तिमान परमात्मा से कृपा या प्रसादाचारणा करते हैं—
“हे ईश्वर! पाठकों और भक्तों को साई-चरण में पूर्ण और अनंत भक्ति हो। श्री साई का मनोहर स्वरूप ही हनुमत आँखों में सदा बसा रहे और वे समस्त प्राणियों में देवाधीदेव साई भक्ति का ही दर्शन करें। एमतसु”

श्री सदिकुमार साईनाथार्याधिकारक।
श्री भक्ति।
संवाद पारवण: सत्प्रथम विहारम
13. श्री साई यश:काय, शिरोदृष्टिते नमामि।